

Class - B.A. Hindi - I

Sub - Hindi (Hons) Paper - I

Written by Rameshwar Kumar  
RBCAR College Mahabubnagar

① आदिकाल के सांस्कृतिक परिस्थिति का  
उल्लेख करें

उत्तर- हिन्दी साहित्य का आदिकाल  
उस समय आरंभ हुआ, जब  
भारतीय संस्कृति उत्कर्ष के चरम  
शिखर पर आरुह हो चुकी  
थी और जब उसने भक्तिकान्त  
को अपना दायित्व सौंपा, इस  
समय भारत में मुस्लिम संस्कृति  
के स्वर्ण शिखर स्थापित होने  
लगी थी। इस प्रकार आदिकाल की  
दो संस्कृतियों के संक्रमण व  
द्वय-विकास की गाथा कहा जा  
सकता है।

भारत में मुस्लिम मुस्लिम  
संस्कृति के परिवर्तन के समय यहाँ  
की विभिन्न जातियों, मतों, आचारों  
विचारों आदि में दीर्घकाल से चली  
आ रही समन्वय की व्यापक प्रक्रिया  
पूर्णता को पहुँच रही थी। इसके  
परिणत के विशाल साम्राज्य ने हिंदू  
धर्म व संस्कृति को राजतुल्य की  
रक्षा का आधार दिया था।  
इस आधार पर धर्म-मोक्ष मोक्षभाव  
अस्त हो गये थे तथा स्वाधीनता  
एवं देशभक्ति के भाव दृढ़ होने  
लगे थे। संगीत, चित्र, मूर्ति, स्थापत्य  
आदि कलाओं में जातीय भाव  
की भावना अभिव्यक्त हो रही थी।



स्थापत्य के क्षेत्र में विशेषतः मंदिरों का निर्माण धार्मिक साधुभाव का द्योतक था। सुवनेश्वर, खजुराहो, पुरी, सोमनाथपुर आदि अनेक स्थानों पर मध्य मंदिर आदिकाल के आरंभ के समय ही बनाये गये थे। आबू का जैन मंदिर जो भारतीय स्थापत्य का बेजोड़ नमूना है ग्यारहवीं शताब्दी की महत्वपूर्ण देन है। इस शताब्दी तक हर हिन्दु के लिए उसका समस्त जीवन धार्मिक कर्तव्यों का प्रतिरूप था। उसका समस्त चरित्र धार्मिक भावना से प्रेरित रहता था। संगीत, मूर्ति, चित्र आदि कलाओं में भी वह अपनी धार्मिकता की ही अभिव्यक्ति करना चाहता था। अरब इतिहासकार अलबरूनी भारतीय कलाओं में धार्मिक भावनाओं की ऐसी व्यापक अभिव्यक्ति देखकर चकित रह गया था। उसने लिखा था - वे (हिंदू) कला के अत्यंत उच्च सोपान पर आरोहण कर चुके हैं। ग. हमारे लोग (मुसलमान) जब उन्हें (मंदिरों आदि को) देखते हैं, तो चकित रह जाते हैं। वे न तो उनका वर्णन ही कर सकते हैं न ही वैसा निर्माण ही कर सकते हैं। महमूद गजनवी भी भारतीय संस्कृति की स्वतंत्र श्रेष्ठता पर मुग्ध हुन। शास्त्रों और कलाओं के अनु-अवलोकन में तल्लीन तत्कालीन जन-जीवन उसके लिए ईर्ष्या का विषय



बन गया था। के क्षेत्र में इस काल  
के अंत में जो थोड़ा-बहुत कार्य  
हुआ, उस पर भी मुस्लिम प्रभाव  
पाया जाता है। हिंदू कलाकार  
अजंता की शैली को सुलने  
जा रहे थे। वे मुस्लिम विचारों  
और भावनाओं की भारतीय रूखाओं  
में अपने रंगों में भर रहे  
थे। राजपूत राजाओं के दरबार  
में मुस्लिम प्रभाव से चित्रकला  
की जो शैली आरंभ हुई उसका  
विकास आकाल के पश्चात् ही  
अधिक हो सका।

जहाँ तक मूर्तिकला का प्रश्न है  
मुस्लिम शासक मूर्तिपूजा के विरोधी  
थे। आकाल के आरंभ तक  
निर्मित अधिकांश मूर्तियाँ दाम से  
प्रभावित थी। अतः इस्लामी शासन  
की स्थापना से मूर्तिकला का  
दुहरा चक्का लगा। एक तो  
पुरानी मूर्तियाँ नष्ट-अष्ट की गयीं  
वहीं नयी मूर्तियों के निर्माण की  
संभावनाएँ कम हुई। राजपूत राजाओं  
का भी मूर्तिकला के विकास के  
लिए न ही अपसर मिलता था,  
न ही उन्हें इसमें रुचि थी।

इस प्रकार आकाल की मार-  
लीय संस्कृति उच्छेद प्राप्त निजी  
परंपरा के द्वारा तथा इस्लाम मिश्रण की  
एक ऐसी कदानी है जिसमें कलात्मक  
चेतना का मुक्त व जीवंत स्वरूप  
बहुत कम देखने को मिलता है।